देश की लगभग तीन-चौथाई आबादी की परवाह न करने वाली राजनीति में बने रहना मुझे असह्य हुआ और मैं ग्रामोदय की दिशा में चल पड़ा। ग्रामविकास के काम की मुझे जानकारी नहीं थी। उस दिशा में मैंने कभी काम किया ही नहीं था। अत: ग्रामवासियों के बीच रहकर उनकी समस्याएं समझना तथा आवश्यकताओं को पूर्ण करना जरूरी था। अत: मैंने अपनी गतिविधियों का केन्द्र ग्रामों को बनाया।

गांव-गांव घूमकर मैं ग्रामवासियों से विचार-विनिमय करने लगा। गांवों में कृषि ही प्रमुख व्यवसाय है। ग्रामवासी दिन में अपने-अपने खेतों में काम करने जाते हैं। उनसे विचार-विनिमय करने का समय रात में ही संभव होता है। अत: मुझे ज्यादातर रातें गांवों में ही बितानी पड़ती थी।

एक दिन एक वृद्ध ग्रामवासी ने मुझसे कहा, "आप बेकार परेशान हो रहे हैं। आप समझ नहीं पाते कि जिन्हें भगवान ने ही कंगाल बनाया है, उन्हें क्या इंसान खुशहाल बना सकता है? आप इस काम में मत पड़िए।" ग्रामवासियों को अपने भाग्य को कोसते हुए निराशाग्रस्त होकर बैठे देख मैं बहुत दु:खी हुआ किन्तु हताश नहीं। मैं ग्रामोदय के मार्ग की खोज में लगा रहा।

मई का महीना था। चारों ओर सूखे का माहौल था। गोण्डा से लगभग 17 कि.मी. पर मुझे एक हरी-भरी बगिया नजर आई। मैं उसमें पहुंचा। वह एक माली की बगिया थी। वह माली अपनी लगभग एक एकड़ जमीन से सालभर में विभिन्न प्रकार की सब्जियों की अनेक फसलें उगाता था। अपनी ताजी सब्जियां गोण्डे की सब्जी मंडी में रोज बेचता था। अपनी कमाई में से उसने गोण्डा सब्जी मंडी में एक छोटा-सा मकान बनाकर किराए पर चढ़ाया था। वह खुशहाली की जिंदगी बिता रहा था। उसकी जीवन-गाथा ने मुझे बहुत उत्साहित किया।

दूसरे दिन मैं उस गांव पहुंचा, जहां के बूढ़े किसान ने मुझे बेकार परेशानी से बचने के लिए कहा था। मैंने उस बूढ़े किसान से कहा, "बाबा! मैं कल एक अचरज देखकर आया हूँ। एक एकड़ भूस्वामित्व वाला बनारसी प्रसाद खुशहाली की जिंदगी जी रहा है।" संयोगवश वह बूढ़ा बनारसी प्रसाद से पुराना परिचित था। उस बूढ़े ने मुझसे कहा, "नाना जी! आप शहरी लोग हम ग्रामीणों की हालत समझ नहीं पाते। उस माली के पिता ने अपनी ससुराल से पक्के कुंए सहित वह जमीन पाई थी। वह माली सिंचाई की सुविधा पाकर खुशहाल हो गया है। यदि हमें भी सिंचाई के साधन मिलें तो हम भी उसी प्रकार से खुशहाली की जिंदगी पा सकते हैं।" उस बूढ़े किसान ने दीनदयाल शोध संस्थान को 'ग्रामोदय' का मार्ग दिखाया। गरीब किसानों के लिए सिंचाई के साधन खोजने में शोध संस्थान जुट गया।

गोण्डा जिले में हिमालय से निकली बारहों माह बहने वाली नदियां हैं। वह जिला पानी पर तैरता है। जिले में पचास हजार ट्यूबवैल्स लगाने पर भी भूगर्भ जलस्तर घटेगा नहीं। इसकी जानकारी पाकर दीनदयाल शोध संस्थान ने पांच एकड़ या उससे छोटे जोत वाले बीस हजार किसानों के खेतों में ट्यूबवैल्स लगाने का संकल्प लिया।

जनता पार्टी की सरकार थी। बैंकों से गरीब किसानों को सात हजार रूपयों तक कर्ज पाने की मंजूरी प्राप्त कराई गई। दो साल में सत्ताईस हजार पांच सौ सोलह नलकूप लग

गए। जमीन में हजार फुट तक पत्थर का नामोनिशान नहीं है। 98 प्रतिशत से अधिक किसानों ने बैंकों का कर्ज वापस कर दिया।

किन्तु चित्रकूट इलाके की परिस्थिति एकदम भिन्न है। इसका अधिकांश इलाका विंध्याचल पहाड़ियों से घिरा है। वर्षा का पानी बह जाता है। अनेक गांवों में पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं होता।

गांव के सभी ग्रामवासी सामूहिक प्रयास करें, तभी बरसात का पानी रोककर साल भर के लिए पानी का संचय किया जा सकता है। लेकिन गांवों में मुकदमेबाजी और पार्टीबाजी के कारण सामूहिक प्रयास संभव नहीं होते।

सरकार के द्वारा चलाई गई "राजीव गांधी जलप्रबंधन योजना" जैसी उपयोगी स्कीमस् व्यवहारिक धरातल पर साकार नहीं होती। कारण, राजनेता और नौकरशाही इस स्कीम को सफल बनाने में तनिक भी रूचि नहीं रखती। दीनदयाल शोध संस्थान ने चित्रकूट इलाके में इस योजना का सदुपयोग करने का निश्चय किया। गांव-गांव में ग्रामवासियों की बैठकें की, उन्हें यह योजना समझाई। ग्रामवासियों को मिलकर काम करने के लिए राजी किया। प्रयोग सफल हुए। परिणामस्वरूप, ऐसे गांवों में जहां पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं था, वहां भी सबके खेतों की सिंचाई संभव हुई। निराशाग्रस्त किसानों के जीवन में सिंचाई के प्रबंध के कारण खुशहाली के दिन दिखाई देने लगे। वर्षा के भरोसे जहां एक फसल भी ठीक से उगाना अनिश्चित था, वहां सिंचाई के प्रबंध के कारण सभी किसान आराम से साल में दो फसलें उगाने लगे हैं। सभी ग्रामवासियों द्वारा मिलकर काम करने का लाभ ग्रामवासियों को दिखाई देने लगा है।

हर गांव के ग्रामवासियों के मुकदमें कचहरियों में चल रहे थे। आपसी अनबन से सबका मिलकर काम करना कठिन था। दीनदयाल शोध संस्थान के "समाजशिल्पी दम्पतियों" ने गांव के बुजुर्गों द्वारा ग्रामवासियों को समझाया कि मुकदमों में लगे रहने से जनजीवन में तरक्की संभव नहीं है। अत: आपस में मिल बैठकर हम आपसी विवादों को सुलझा लें। एक बार जब सभी विवाद सुलझा लिए जाएंगें, तब उन सिंचाई परियोजनाओं पर मिलकर काम करना संभव होगा, जिनसे सभी ग्रामवासियों को लाभ होगा।

गांव के लोगों को बुजुर्गों की सलाह जंच गई। गांवों में होड़ लग गई कि हम अपने गांव को विवादमुक्त बनाएंगे। परिणामस्वरूप, अभी तक चित्रकूट के चारों ओर के 80 गांव विवादमुक्त हुए हैं। गांव के लोगों ने सर्वसम्मति से तय किया है कि हम अपना विवाद लेकर अब कचहरी में नहीं जाएंगे, आपस में ही मिल बैठकर सुलझा लेंगे। गांवों में फैली मुकदमेबाजी की सालों से चली आ रही महामारी से मुक्ति पाने का मार्ग सुलभ हो गया है। सन् 2010 तक चित्रकूट के चारों ओर के 500 गांव इसी रूप में विकसित होंगे।

शुभाकांक्षी -

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)